

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये युद्धकाण्डे

॥ षोडशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ षोडशः सर्गः ॥

रारणेन रितीषणस्य तिरस्करणं रितीषणेनापि रारणं निर्भर्त्स्य
तत्स्थानान्निर्गमनम्

सुनिरिष्टं हितं राक्यमुक्तरन्तं रितीषणम्।
अब्रवीत् परुषं राक्यं रारणः कालचोदितः ॥ 6.16.1 ॥

रसेत् सह सपत्नेन क्रुद्धेनाशीरिषेण च।
न तु मित्रप्रदानेन संरसेच्छक्रसेरिना ॥ 6.16.2 ॥

जानामि शीलं ज्ञातीनां सर्वलोकेशु राम्भस।
हृष्यन्ति र्यसनेष्वेते ज्ञातीनां ज्ञातयः सदा ॥ 6.16.3 ॥

प्रधानं साधकं रैदयं धर्मशीलं च राम्भस।
ज्ञातयोऽप्यरमन्यन्ते शूरं परिभरन्ति च ॥ 6.16.4 ॥

नित्यमन्योन्यसंश्रुता र्यसनेष्वराततायिनः।
प्रच्छन्नहृदया घोरा ज्ञातयस्तु भयारहाः ॥ 6.16.5 ॥

श्रयन्ते हस्तिभिर्गीताः श्लोकाः पद्मरने पुरा।
पाशहस्तान् नरान् दृष्ट्वा शृणुष्व गदतो मम ॥ 6.16.6 ॥

नाग्निर्नान्यानि शस्त्राणि न नः पाशा भयारहाः।
घोराः स्वार्थप्रयुक्तास्तु ज्ञातयो नो भयारहाः ॥ 6.16.7 ॥

উপায়মেতে রক্ষ্যন্তি গ্রহণে নাত্র সংশযঃ।
কৃৎস্নাদ্ ভযাজ্জ্জাতিভযং কুকষ্টং রিহিতং চ নঃ ॥ 6.16.8 ॥

রিদ্যতে গোষু সম্পন্নং রিদ্যতে জ্জাতিতো ভযম্।
রিদ্যতে স্ত্রীষু চাপল্যং রিদ্যতে ব্রাহ্মণে তপঃ ॥ 6.16.9 ॥

ততো নেষ্টমিদং সৌম্য যদহং লোকসৎকৃতঃ।
ঐশ্বর্যমভিজাতশ্চ রিপুণাং মূর্ধ্নি চ স্থিতঃ ॥ 6.16.10 ॥

যথা পুঙ্করপত্রেষু পতিতাস্তোষবিন্দরঃ।
ন শ্লেষমভিগচ্ছন্তি তথানার্যেষু সৌহৃদম্ ॥ 6.16.11 ॥

যথা শরদি মেঘানাং সিঞ্চতামপি গর্জতাম্।
ন ভরত্যম্বুসঙ্কেতস্তথানার্যেষু সৌহৃদম্ ॥ 6.16.12 ॥

যথা মধুকরস্তর্ষাদ্ রসং বিন্দন্ন তিষ্ঠতি।
তথা ঞ্জরমপি তত্রৈর তথানার্যেষু সৌহৃদম্ ॥ 6.16.13 ॥

যথা মধুকরস্তর্ষাৎ কাশপুষ্পং পিবন্নপি।
রসমত্র ন বিন্দেত তথানার্যেষু সৌহৃদম্ ॥ 6.16.14 ॥

যথা পূর্ং গজঃ স্নাত্বা গৃহ্য হস্তেন রৈ রজঃ।
দূষযত্যাঅনো দেহং তথানার্যেষু সৌহৃদম্ ॥ 6.16.15 ॥

যোহন্যস্ত্বেরংরিধং ব্রূযাদ্ রাক্যমেতন্নিশাচর।
অস্মিন্ মুহূর্তে ন ভরেৎ ঞ্জাং তু ধিক্ কুলপাংসন ॥ 6.16.16 ॥

ইত্যুক্তঃ পরুষং রাক্যং ন্যাযরাদী রিভীষণঃ।
উৎপপাত গদাপাণিশ্চতুর্ভিঃ সহ রাক্ষসৈঃ ॥ 6.16.17 ॥

অব্ররীচ্চ তদা রাক্যং জাতক্রোধো রিভীষণঃ।
অন্তরিক্ষগতঃ শ্রীমান্ ভ্রাতা রৈ রাক্ষসাধিপম্ ॥ 6.16.18 ॥

স ৎরং ভ্রান্তোহসি মে রাজন্ ব্রুহি মাং যদ্ যদিচ্ছসি।
 জ্যেষ্ঠো মান্যঃ পিতৃসমো ন চ ধর্মপথে স্থিতঃ।
 ইদং হি পরুষং বাক্যং ন ক্ষমাম্যগ্রজস্য তে ॥ 6.16.19 ॥

সুনীতং হিতকামেন বাক্যমুক্তং দশানন।
 ন গৃহ্ণন্ত্যকৃতাত্মানঃ কালস্য বশমাগতাঃ ॥ 6.16.20 ॥

সুলভাঃ পুরুষা রাজন্ সততং প্রিযরাদিনঃ।
 অপ্ৰিযস্য চ পথ্যস্য বক্তা শ্রোতা চ দুর্লভঃ ॥ 6.16.21 ॥

বদ্ধং কালস্য পাশেন সর্ভভূতাপহারিণঃ।
 ন নশ্যন্তমুপেক্ষে ৎরাং প্রদীপ্তং শরণং যথা ॥ 6.16.22 ॥

দীপ্তপারকসঙ্ক্ৰাশৈঃ শিতৈঃ কাঞ্চনভূষণৈঃ।
 ন ৎরামিচ্ছাম্যহং দ্রষ্টুং রামেণ নিহতং শরৈঃ ॥ 6.16.23 ॥

শূরাশ্চ বলরন্তশ্চ কৃতাস্ত্রাশ্চ নরা রণে।
 কালাভিপন্নঃ সীদন্তি যথা বালুকসেতরঃ ॥ 6.16.24 ॥

তন্মর্ষযতু যচ্ছোক্তং গুরুৎরাদ্বিতমিচ্ছতা।
 আত্মানং সর্বথা রক্ষ পুরীং চেমাং সরাক্ষসাম্।
 স্বস্তি তেহস্ত গমিষ্যামি সুখী ভর মযা বিনা ॥ 6.16.25 ॥

নিরার্যমাণস্য মযা হিতৈষিণা
 ন রোচতে তে বচনং নিশাচর।
 পরান্তকালে হি গতাযুষো নরা
 হিতং ন গৃহ্ণন্তি সুহৃদ্বিরীরিতম্ ॥ 6.16.26 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামাযণে বাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে যুদ্ধকাণ্ডে ষোড়শঃ সর্গঃ ॥